श्री वासुपूज्य विधान

माण्डला

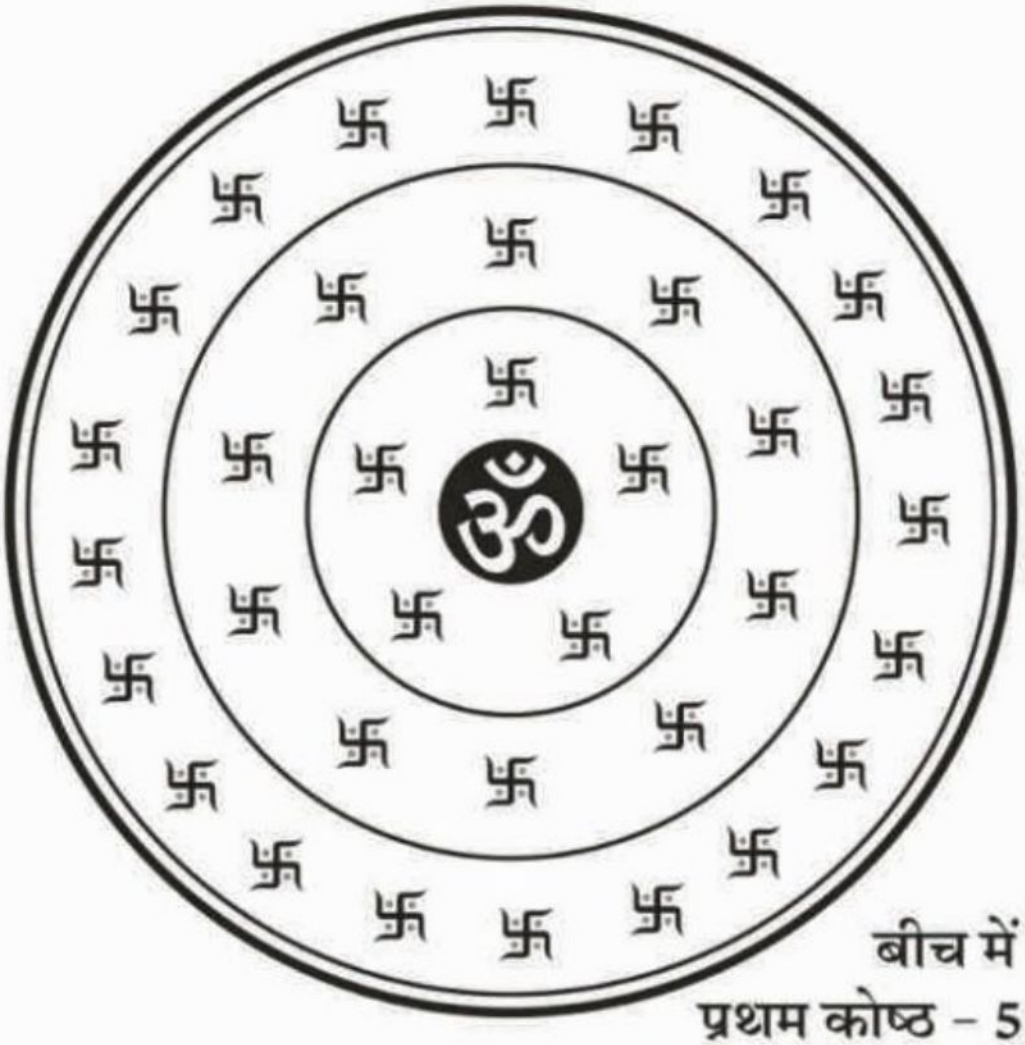

बीच में - ॐ
प्रथम कोष्ठ - 5 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ - 10 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ - 20 अर्घ्य
कुल - 35 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

श्री वासुपूज्य स्तवन

दोहा - वासुपूज्य भगवान शुभ, जग में हुए महान।
मुक्ती पथ का आपने, दिया विशद सोपान।।

(ज्ञानोदय छन्द)

वासुपूज्य के चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार।
केवलज्ञान जगाने वाले, सकल जगत के जाननहार।।
महिमा हम गाते जिनवर की, सर्व कर्म क्षय करने को।
बसो हृदय में मेरे प्रभु जी, दुर्निवार के हरने को।।1।।
प्रथम बालयति तीर्थंकर प्रभु, वासुपूज्य कहलाए महान।
चौवन सागर जिन श्रेयांस के, बाद हुए हैं विश्व प्रधान।।
लाल रंग तन का शुभ पाए, भैंसा जिनकी है पहिचान।
वंश इक्ष्वाकु कश्यप गोत्री, ऊँचे सत्तर धनुष प्रमाण।।2।।
फाल्गुन वदी चतुर्दशि को प्रभु, जन्मे वासुपूज्य भगवान।
लाख बहत्तर वर्ष की आयु, जन्मत ही धारे त्रय ज्ञान।।
वाद्य बजे आनन्दमयी शुभ, जिसकी महिमा अपरम्पार।
ऐरावत ले इन्द्र ने आके, खुश होके बोला जयकार।।3।।
पाण्डु शिला पर न्हवन कराए, होकर के जो भाव विभोर।
इन्द्र बाल ऐरावत पर ले, जाता पाण्डुक वन की ओर।।
शचि से बालक इन्द्र राज ने, लेकर दर्शन किया महान।
पाण्डुक वन में पाण्डु शिला पर, बैठाकर कीन्हा गुणगान।।4।।
एक हजार आठ कलशों से, न्हवन कराया अपरम्पार।
सौ इन्द्रों ने मिलकर बोला, वासुपूज्य का जय जयकार।।
इन्द्रराज ने बालक का शुभ, वासुपूज्य बतलाया नाम।
भक्तिभाव से चरण कमल में, कीन्हा बारम्बार प्रणाम।।5।।

।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

श्री वासुपूज्य विधान

स्थापना

दोहा - सारे जग से पूज्य हैं, वासुपूज्य भगवान।
भाव सहित जिनका हृदय, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

नीर यह क्षीर सा लाए, रोग त्रय नाश हो जाए।
पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाने गंध यह लाए, भवातप पूर्ण नश जाए।
पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ अक्षत धुवा लाए, चरण की भक्ति को आए।
पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल सुरभित चुना लाए, काम रुज पूर्ण नश जाए।
पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचरु ताजे बना लाए, क्षुधा रुज नाश को आए।
पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमय दीप प्रजलाए, मोह तम नाश हो जाए।
पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशांगी धूप यह लाए, मुक्ति कर्मों से मिल जाए।
पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाने फल सरस लाए, मोक्ष हमको भी मिल जाए।
पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाने अर्घ्य यह लाए, विशद शिव प्राप्ति को आए।
पूज्य वासुपूज्य हैं भाई, रहे जो मोक्ष पददायी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - शांतीधारा दे रहे, मन में शांती धार।
भाते हैं यह भावना, पावन रहें विचार।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा - पुष्पांजलिं करते यहाँ, पाने शिव सोपान।
अर्चा का फल पाएँगे, पावन पद निर्वाण।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

षष्ठी अषाढ़ वदि पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए।
उत्सव सब देव मनाए, जिन गृह आके हर्षाए।।1।।

ॐ ह्रीं अषाढ़ कृष्ण षष्ठ्यां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि चौदश आई, चंपापुर जन्मे भाई।
जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, जिनवर का न्हवन कराए।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि फाल्गुन चौदश स्वामी, संयम धारे जगनामी।
वैराग हृदय में छाया, भोगों से मन अकुलाया।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि द्वितिया माघ निराली, फैलाए ज्ञान की लाली।
अज्ञान के मेघ हटाए, केवल रवि जिन प्रकटाए।।4।।

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल द्वितियायां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि भादों चतुर्दशि जानो, जिनवर शिव पाए मानो।
मंदारसुगिरि से स्वामी, जिन बने मोक्ष पथगामी।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - वसुपूज्य सुत आप हैं, चम्पापुर की शान।
गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, पाए मोक्ष कल्याण।।

(चौपाई छन्द)

चयकर महाशुक्र से आए, चम्पापुर को धन्य बनाए।
वासुपूज्य भगवान कहाए, भैंसा लक्षण पग में पाए।।1।।
महिमा जिनकी जग ये गाए, प्रथम बाल ब्रह्मचारी कहाए।
अष्ट वर्ष की आयू पाई, अणुव्रतों को पाए भाई।।2।।
चम्पापुर नगरी में स्वामी, पंच कल्याणक पाए नामी।
विमल भावना बारह भाए, मन में तब वैराग्य जगाए।।3।।
पावन महाव्रतों के धारी, पाए रत्नत्रय शुभकारी।
एक वर्ष छद्मस्थ कहाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।4।।
हुए आप द्वादश तप धारी, कर्म निर्जरा कीन्हे भारी।
क्षपक श्रेण्यारोहण पाए, कर्म घातिया आप नशाए।।5।।
अनन्त चतुष्टय जो प्रगटाए, छ्यासठ गणधर प्रभु के गाए।
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय-जयकार लगाए।।6।।
दिव्य देशना आप सुनाए, जीव ज्ञान दर्शन शुभ पाए।।
श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शिश झुकाते।।7।।

सोरठा- वासुपूज्य भगवान, की महिमा जग में अगम।
करते हम गुणगान, विशद भाव से चरण में।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- जग में हुए प्रसिद्ध, केवल ज्ञानी जो हुए।
पद पाए प्रभु सिद्ध, अतः पूजते जगत जन।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

प्रथम वलय

दोहा - पंच महाव्रत प्राप्त जिन, जग में हुए प्रधान।
पुष्पांजलि करते चरण, जिन के महति महान।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

पंच महाव्रत के अर्घ्य

मोतियादाम छन्द

महाव्रत रहा अहिंसा जान, जीव की रक्षाकार महान।
प्राप्तकर के जो जिन भगवान, करें निज पर का भी कल्याण।।1।।

ॐ ह्रीं अहिंसा महाव्रत धारकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

सत्यव्रत धारण करें विशेष, अतः प्रभु बनते हैं तीर्थेश।
प्राप्तकर के जो जिन भगवान, करें निज पर का भी कल्याण।।2।।

ॐ ह्रीं सत्य महाव्रत धारकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

प्रभू होते अचौर्य व्रत वान, प्राप्त करते हैं पद निर्वाण।
प्राप्तकर के जो जिन भगवान, करें निज पर का भी कल्याण।।3।।

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रत धारकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ब्रह्मचर्य धारी निज में लीन, पालते सहस अठारह शील।
प्राप्तकर के जो जिन भगवान, करें निज पर का भी कल्याण।।4।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रत धारकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

परिग्रह चौबिस करके त्याग, धारते मन में पूर्ण विराग।
प्राप्तकर के जो जिन भगवान, करें निज पर का भी कल्याण।।5।।
ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रत धारकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

महाव्रत धारी जिन तीर्थेश, सिद्ध पद पाते स्वयं विशेष।
प्राप्तकर के जो जिन भगवान, करें निज पर का भी कल्याण।।6।।
ॐ ह्रीं पंच महाव्रत प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितिय वलय

दोहा - संयम धारण कर हुए, दश धर्मों के ईश।
पुष्पांजलि करते यहाँ, धर चरणों में शीश।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

दश धर्म के अर्घ्य

चौपाई

क्रोध कषाय को पूर्ण नशाते, उत्तम क्षमा धर्म प्रगटाते।
श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा धर्म धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मद की दम का करें सफाया, जिनने मार्दव धर्म उपाया।
श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।
ॐ ह्रीं उत्तममार्दव धर्म धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

छोड़ रहे जो मायाचारी, होते वे आर्जव के धारी।
श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जव धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

लोभ नाश जिनका हो जाए, वह ही शौच धर्म प्रगटाए।
श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

असत वचन के हैं जो त्यागी, सत्य धर्म धारी बड़भागी।
श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नहीं असंयम जिनको भाए, वह संयम धारी कहलाए।
श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कर्म निर्जरा करने वाले, उत्तम तप धर रहे निराले।
श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

द्विविध संग से रहित बताए, उत्तम त्याग धर्म धर गाए।
श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

किंचित् राग रहित अविकारी, उत्तम आकिंचन व्रत धारी।
श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य व्रतधारी, होते आतम ब्रह्म विहारी।
श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।10।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्य धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

उत्तम क्षमा आदि जो पाए, वह निश्चय शिवपुर को जाए।
श्री जिनवर की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।11।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि धर्म धारक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

तृतिय वलय

दोहा - संकट हारी लोक में, वासुपूज्य भगवान।
करते जिनकी अर्चना, पाएँ शांति प्रधान।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अनिष्ट निवारक अर्घ्य

(चौपाई छन्द)

दुःख सहे भव-भव में भारी, प्रभु जी जिसके हैं परिहारी।
वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं ''भव-भव उपद्रव नाशक परम सुख शान्ति प्रदायक''
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्भिक्षादि उपद्रव भारी, होय आपदा जो दुखकारी।
वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं ''दुर्भिक्षादि अनेक उपद्रव नाशक'' श्री वासुपूज्य
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वजन बन्धु परिवार सताए, जीवन में आकुलता आए।
वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं ''बंधुत्व परिवार उपद्रव नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केन्सर कुष्ट भगन्दर भारी, दुखदायक होवे बीमारी।
वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं ''भगन्दर कुष्ट केंसर किडनी आदि सर्व रोग नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाकिन डाकिन भूत भवानी, आदि सताए हो अज्ञानी।
वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं ''भूत प्रेत डाकिनी व्यंतरकृत बाधा नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रही अविद्या मोहनि कारी, स्तम्भनि है बहु दुखकारी।
वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं ''मोहनि स्तंभनि आदि कुविद्या नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादिक जो रही कषाएँ, क्षण क्षण में जो कष्ट दिलाएँ।
वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं ''क्रोधादि कषाय नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयकर आदिक छापामारी, की बाधा के हैं परिहारी।
वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं ''आयकर छापामारी आदि कष्ट निवारक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आलस और प्रमाद सताए, शुभ कार्यों में कष्ट दिलाए।
वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं ''प्रमाद नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है संसार दुखों का डेरा, डाले है जीवन में घेरा।
वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं ''संसार दुख नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अल्प अकाल मृत्यु आ जाए, जिसके कारण दुख बहु पाए।
वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।11।।

ॐ ह्रीं ''अल्प मृत्यु नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

यह संसार असार कहाए, अतः विरक्ती इससे आए।
वासुपूज्य जिनवर को ध्याएँ, अपने सारे कष्ट मिटाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं ''असार संसार नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

(चाल छन्द)

गृह राज्य भ्रष्ट हो जावें, जो कायरता को पावें।
जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।13।।

ॐ ह्रीं ''राज्यगृह पद भ्रष्ट उद्भव उपद्रव नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गति भ्रमण नशावें, जो जिन महिमा को गावें।
जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।14।।

ॐ ह्रीं ''चतुर्गति भ्रमण दुख नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो कलह शत्रुता नाशी, श्री जिन पद का विश्वासी।
जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।15।।

ॐ ह्रीं ''कलह शत्रुता नाशी'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

शुभ कार्य विघ्न के नाशी, होते हैं धर्म प्रकाशी।
जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।16।।

ॐ ह्रीं ''शुभ कार्य मध्ये विघ्न विनाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्ग बैर के नाशी, जिन मार्ग के हों विश्वासी।
जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।17।।

ॐ ह्रीं ''सर्व उपसर्ग तूफान बैर रोग नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कटु हास्य वचन परिहारी, होते जग मंगलकारी।
जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।18।।

ॐ ह्रीं ''कटु वचन पाप नाशक'' श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जो रत्नत्रय शुभ पावें, अन्तिम चारित्र जगावें।
जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।19।।

ॐ ह्रीं ''यथाख्यात चारित्र प्राप्ताय'' श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जिन भक्ति अरिष्ट निवारी, फलदायक है शुभकारी।
जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।20।।

ॐ ह्रीं "सर्व अरिष्ट निवारक" श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्चा कर कष्ट मिटाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।
जो वासुपूज्य को ध्याएँ, संकट उनके टल जाएँ।।21।।

ॐ ह्रीं "सर्व मंगल ग्रह अरिष्ट निवारक" श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा -गुण विशिष्ट पाए प्रभू, वासुपूज्य भगवान।
जिन की अर्चाकर मिले, हमको शिव सोपान।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा - वसुपूज्य सुत आप हैं, विजया माँ के लाल।
वासुपूज्य भगवान की, गाते हम जयमाल।।

तर्ज - तेरे पाँच हुए कल्याण.....

किया तूने जगत उद्धार प्रभु, अब मेरा भी तो उद्धार कर दो।
तू सद् ज्ञानी आतम ज्ञानी, हमें भवसागर से पार कर दो।।टेक।।
नहीं लोक में तुम सम कोई, औरों का कल्याण करे।
नहीं मिला कोई हमको ऐसा, दूर मेरा अज्ञान करे।।

अब मैं चाहूँ भगवन-भगवन मेरे, मैं ज्ञान सहित आचरण करूँ।
वह दान मुझे आचार कर दो-किया...।।1।।
सता रहे हैं कर्म अनेकों, मोहादिक ने मोह लिया।
सत्पथ पर न बढ़े कभी भी, मिथ्या ने मजबूर किया।।
अब मैं चाहूँ जिनवर-जिनवर, जो रत्नत्रय है धर्म मेरा।
उस धर्म के अब आधार कर दो-किया...।।2।।
भटक रहा अंजान मुसाफिर, मंजिल की शुभ आस लिए।
रफता-रफता बढ़ते आया, दर पे तेरे विश्वास लिए।।
अब मैं चाहूँ भगवन्-भगवन्, तू है दाता ईश्वर सबका।
अब दूर मेरा आगार कर दो-किया..।।3।।
जग को तेरी बहुत जरूरत, तू जग का रखवाला है।
तू है मंदिर, तू है मस्जिद, तू विशद ज्ञान की शाला है।।
अब मैं चाहूँ भगवन्-भगवन्, जो नित्य निरंजन रूप मेरा।
वह निराकार आकार कर दो-किया....।।4।।
जिसने प्रभु जी तुमको ध्याया, उसका कष्ट मिटाया है।
बिन माँगे ही सद्भक्तों ने, मनवांछित फल पाया है।।
अब मै चाहूँ जिनवर-जिनवर, मैं तेरा ही गुणगान करूँ।
उस ज्ञान का मुझको दान कर दो-किया...।।5।।

दोहा - पंचकल्याणक पाए हैं, चम्पापुर में आन।
वासुपूज्य भगवान हैं, जिनशासन की शान।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - पुष्पांजलि अर्पित करें, 'विशद' भाव के साथ।
हमको भी मुक्ती मिले, झुका चरण में माथ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री वासुपूज्य भगवान की आरती

श्री वासुपूज्य भगवान, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ, थारी मूरत निहारूँ, कर दो भव से पार।।
आज थारी.....

वसुपूज्य के सुत हो प्यारे, जयावती के राजदुलारे।
चम्पापुर महाराज-आज थारी.....।।1।।

जन्म के अतिशय तुमने पाए, केवलज्ञान को भी प्रगटाए।
देवोंकृत शुभकार-आज थारी.....।।2।।

कर्म घातियाँ तुमने नाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे।
शिवपुर के सरताज-आज थारी.....।।3।।

अनन्त चतुष्टय तुमने पाए, प्रातिहार्य भी शुभ प्रकटाए।
तीर्थंकर जिनराज-आज थारी.....।।4।।

हम भी द्वार आपके आए, पद में सादर शीश झुकाए।
'विशद' ज्ञान के ताज-आज थारी.....।।5।।

श्री वासुपूज्य चालीसा

दोहा - परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
वासुपूज्य के पद युगल, विनत झुके मम् शीश।।

चौपाई

वासुपूज्य जिनराज कहाए, अपने सारे कर्म नशाए।।1।।
अनुपम केवलज्ञान जगाए, अविनाशी अनुपम पद पाए।।2।।
महाशुक्र से चयकर आए, चम्पापुर नगरी कहलाए।।3।।
पिता वसु नृप अनुपम गाए, जयावती के लाल कहाए।।4।।
अषाढ़ कृष्ण दशमी दिन पाए, इक्ष्वाकु शुभ वंश उपाए।।5।।
गर्भ नक्षत्र शतभिषा गाए, प्रातः काल का समय बताए।।6।।
फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी गाया, जन्म कल्याणक प्रभु ने पाया।।7।।
शुभ नक्षत्र विशाखा गाया, इन्द्र तभी ऐरावत लाया।।8।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, भैंसा चिन्ह पैर में पाया।।9।।
वासुपूज्य तब नाम बताया, हर्ष सभी के मन में छाया।।10।।
लोग सभी जयकार लगाए, सत्तर धनुष ऊँचाई पाए।।11।।
माघ शुक्ल की चौथ बताए, जाति स्मरण प्रभु जी पाए।।12।।
अपराह्न काल का समय बताया, एक उपवास प्रभु ने पाया।।13।।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, लाल वर्ण तन का प्रभु पाए।।14।।
प्रभू मनोहर वन में आए, तरु पाटला का तल पाए।।15।।
राजा छह सौ छह बतलाए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।16।।

आयु लाख बहत्तर पाए, उत्तम तप कर कर्म नशाए।।17।।
माघ शुक्ल द्वितीया शुभ पाए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।।18।।
मिलकर इन्द्र वहाँ पर आए, प्रभु के पद में ढोक लगाए।।19।।
समवशरण सुन्दर बनवाए, साढ़े छह योजन कहलाए।।20।।
गौरी श्रेष्ठ यक्षिणी जानो, सन्मुख यक्ष प्रभु का मानो।।21।।
एक माह पूरव से भाई, योग निरोध किए सुखदायी।।22।।
फाल्गुन कृष्णा पंचमी आई, जिस दिन प्रभु ने मुक्ति पाई।।23।।
शुभ नक्षत्र अश्विनी गाया, अपराह्न काल का समय बताया।।24।।
मुनिवर छह सौ एक कहाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।।25।।
छियासठ प्रभु के गणधर गाए, मन्दर उनमें प्रथम कहाए।।26।।
बारह सौ थे पूरब धारी, दश हजार विक्रिया धारी।।27।।
शिक्षक पद के धारी गाए, उन्तालिस हजार दो सौ कहलाए।।28।।
छह हजार थे केवलज्ञानी, छह हजार मनःपर्यय ज्ञानी।।29।।
दश हजार विक्रिया के धारी, ब्यालिस सौ वादी शुभकारी।।30।।
चौवन सौ अवधि ज्ञानी पाए, सहस्त्र बहत्तर सब ऋषि गाए।।31।।
आर्यिकाएँ प्रभु चरणों आईं, एक लाख छह सहस्त्र बताईं।।32।।
वरसेना गणिनी कहलाई, आयु लाख बहत्तर पाई।।33।
एक वर्ष छद्मस्थ बिताए, चम्पापुर से मुक्ती पाए।।34।।
पाँचों कल्याणक शुभ जानो, चम्पापुर से मुक्ती मानो।।35।।
ग्रहारिष्ट मंगल के स्वामी, वासुपूज्य जिन अन्तर्यामी।।36।।

मंगल ग्रह हो पीड़ाकारी, प्रभु का वह बन जाए पुजारी।।37।।
आरती कर चालीसा गाए, ग्रह पीड़ा को शीघ्र नशाए।।38।।
सुख-शांती वह मानव पाए, उसका भाग्य उदय में आए।।39।।
यही भावना 'विशद' हमारी, मुक्ती दो हमको त्रिपुरारी।।40।।

दोहा - चालीसा जो भाव से, पढ़ते दिन चालीस।
पाते सुख शांती विशद, बनते शिवपति ईश।।

जाप्य :- ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।

इष्ट प्रार्थना

भावना भगवान मेरी, यह सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील धर, हर जीव का उद्धार हो।।1।।
पाप का परिहार होवे, धर्म का प्रचार हो।
वीर वाणी का विशद, व्यवहार घर-घर बार हो।।2।।
सप्त व्यसन का जहाँ से, हे प्रभू जी ह्रास हो।
शान्ति वा आनन्द में, हर जीव का विश्वास हो।3।।
देव गुरू वाणी में, हर इक जीव का विश्वास हो।
हर बुराई का जहाँ से, पूर्णता अब नाश हो।।4।।
खेद अरु भय शोक हे जिन!, जीव के सब दूर हों।
सौख्य शांती से सभी जन, पूर्णतः भरपूर हों।।5।।
संत श्रावक के हृदय से, मद सदा चकचूर हो।
हो 'विशद' धर्मात्मा हर, नूर का भी नूर हो।।6।।

दोहा- भाए जो यह भावना, मन में श्रद्धा धार।
अल्पकाल में जीव वह, हो जाए भव पार।।